# इस मास में विशेष: साधना दीक्षा

## अक्षय वर्चस्व कार्य सिद्धि साधना

### परशुराम जयंती, 29 अप्रैल

केवल **भाग्य** के भरोसे बैठें रहने से जीवन **गतिशील** होना संभव नहीं है, भाग्य भी उसी का साथ देता है जो जीवन में **क्रियाशील** होता है। प्रत्येक व्यक्ति **परिश्रम** करता है, मेहनत करता है लेकिन बहुत कम व्यक्ति ही जीवन में **सफल** हो पाते हैं। जब **कर्म** और **भाग्य** का **संयोग** होता है तो व्यक्ति की अपने जीवन में **इच्छित कामनाओं** की पूर्ति होती है।

**अक्षय वर्चस्व कार्य सिद्धि साधना** तो जीवन का **अक्षय तत्व** है। वह **सौभाग्यशाली** ही **साधक** होते हैं जिन्हें यह तत्व **आत्मसात** करने का **श्रेष्ठ अवसर** प्राप्त होता है। साधक के भाग्य निरन्तर गति से **वृद्धि** होने से ही **आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति** की ओर **अग्रसर** होता है।

## मातंगी महाविद्या साधना

### मातंगी जयंती, 30 अप्रैल

आज के इस **मशीनी युग** में जीवन **ठूंठ** और **नीरस** बनकर रह गया है। **जीवन** में **सरसता, आनन्द, भोग-विलास, प्रेम, सुयोग्य पति-पत्नी** प्राप्ति के लिये **मातंगी महाविद्या साधना** अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। इससे **साधक** में **वाक् सिद्धि** के **गुण** भी आ जाते हैं। उसमें **आशीर्वाद** व **श्राप** देने की **शक्ति** आ जाती है। उसकी वाणी में **माधुर्य** और **सम्मोहन** व्याप्त हो जाता है और जब वह लोगों के बीच बोलता है, तो सुनने वाले उसकी बातों से **मुग्ध** हो जाते हैं। इस साधना के माध्यम से **हृदय** में **आनन्द रस** का संचार होता है, **उमंग, प्रेम** और **हास्य** का संचार होता है।

## बलिष्ठ सौन्दर्य आकर्षण रम्भा साधना

### मोहिनी एकादशी, 08 मई

जीवन की **शुष्कता** में **रस** और **सौन्दर्य की अभिवृद्धि** प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। अपने आप को **सम्मोहन** से युक्त करना प्रत्येक **पुरूष** अथवा **स्त्री** की इच्छा रहती है। **काम्य जीवन** की पूर्णता **अप्सरा साधना** से प्राप्त हो सकती है और **रम्भा** तो अप्सराओं में भी **सर्वश्रेष्ठ अप्सरा** है। **रम्भा अप्सरा** का एकादश स्वरूप **धनदायक** तथा **ऐश्वर्य प्रदायक** है। जो साधकों के लिये **धन** तथा **ऐश्वर्य** के अभिवृद्धि के साथ स्वयं का **सहचर्य आनन्द पूर्वक** प्रदान करती है।

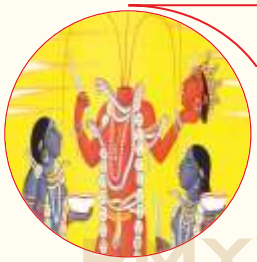

## शत्रु वज्र प्रस्तारिणी छिन्नमस्ता प्रयोग

### छिन्नमस्ता जयंती, 11 मई

**प्रत्येक व्यक्ति** अपने जीवन में **शत्रुओं** से **परेशान** रहता ही है, चाहे वह **बाह्य शत्रु** हों या **काम, क्रोधादि** आन्तरिक, वे हमेशा ही उसे पीड़ित करते ही रहते हैं और उसकी **उन्नति** में **बाधायें** उत्पन्न करते ही रहते हैं। अधिकतर ऐसा होता है, कि व्यक्ति चाह कर भी उनके **चंगुल** से नहीं निकल पाता। यदि आपके शत्रु भी आप पर **हावी** हो रहे हों, तो आप **महाविद्या छिन्नमस्ता प्रयोग** करें। यह **शत्रुओं पर वज्र** की तरह **प्रहार** करती है। उनका **नामोनिशान** नहीं रहता है। इसकी **प्रचण्डता** को अपने **जीवन में उतार** कर उन पर **विजय** प्राप्त कर सकते हैं।

**साधना** एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।